E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

गढ़वाल की संस्कृति में जागर अथवा देव गाथाओं की सामाजिक प्रासंगिकता

सुप्रिया सक्सेना

शोध-छात्रा,संगीत विभाग

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15059309

IMPACT FACTOR 5.924

शोध- प्रपत्र

गढ़वाल की धरती नृत्यमयी है। यहां के वातावरण में अनोखी रागात्मकता है। प्रकृति के अंग- उपांग नदी - झरने - पशु-पक्षी, नाना प्रकार के पुष्प यहां के लोक में एक आनंदमयी रासधारा घोल देते हैं। देवता भी यहां आते हैं तो नृत्य किए बिना नहीं रहते हैं। इसलिए तो इस केदारखंड को देवभूमि कहा गया है। यहां के दिव्य वातावरण एवं नैसर्गिक सौंदर्य पर दुनिया मुग्ध हो जाती है।

मनुष्य के यहां देवी - देवताओं के साथ मानवेतर संबंध प्रतीत नहीं होते हैं। वह रुष्ट होने पर देवताओं को विशेष आह्वान-अर्चन कर मानवलोक में निमंत्रित करता है और उनकी नृत्यमयी उपासाना कर उन्हें सम्मान, भेंट (द्रव्य) के साथ विदा करता है। देवी-देवताओं के इस संगीतमयी आह्वान - नर्तन को ही जागर कहा जाता है।

सामान्यतः अनुष्ठान विशेष में किसी देवी-देवता को आह्वान और विरुद गाकर अवतरित करने की प्रक्रिया जागर कहलाती है। इस अनुष्ठान अथवा प्रक्रिया में गाए जाने वाले आख्यान को जागर गाथा कहा जाता है । इन्हें धार्मिक गाथा भी कहा जाता है। गाथा गायन के साथ ढोल दमाऊं, कांस की थाली और भंकोरा आदि पर्वतीय वाद्य यंत्रों का वादन होता है । दूसरे शब्दों में किसी अलौकिक शक्ति को मानव माध्यम पर अवतरित करने को उसे जगाना कहा जाता है। गढ़वाल में इसे ही जागर शब्द का मूल माना जाता है। (1)

जागर शुद्ध संस्कृत शब्द है, जो जागृ के साथ घल् प्रत्यय लगाकर बना है । उसका अर्थ होता है-जागरण । कालिदास के रघुवंश और महाभारत के जागर पर्व प्रसंग में जागर शब्द का उल्लेख आया है। रात्रि में जागरण

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कर अथवा किसी माध्यम पर देवी शक्ति के आह्वान अवतरण और नृत्यमयी पूजा के लिए किए गए अनुष्ठान तथा गीतों को जागर कहा जाता है।

भारतीय नाट्य शास्त्र में यह विश्वास प्रकट किया गया है कि नृत्य से देवता प्रसन्न होते है। संभवतया सभी परंपरा के अनुरूप पहाड़ों में भी अभीष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट निवारण के लिए देवता नचाने की प्रथा है।(2)

स्थानीय बोली में देवगाथाएं, देवताओं के जागर या वार्ता हैं। जागर स्तुति गीत हैं, जिनमें देवताओं के अवर्णनीय गुण, शौर्य, वीर्य, पौरुष और अद्भुत शक्तियों का गान किया जाता है। जनपदीय परंपरा के ये जागर असुप्त अवस्था के प्रतीक हैं। इनका गान देव विशेष का आह्वान है। स्थानीय देव जिनमें प्रमुख नागराजा, नर सिंह, हत्या, आछरी, भैरों, नगेला, निरंकार प्रमुख हैं, सबके अपने आह्वान गीत हैं। इन देवों का अपना विशेष महत्व जनपदीय जीवन में है।

जागर का अर्थ है मंगला मंगलकरण समर्थ दैवी शक्ति को जाग्रत करना तथा उनके माध्यम / डंगरिया / प्श्वा में उनका अवतरण कराना अर्थात् कष्टों के निवारणार्थ उनका आह्वान करना ।

स्पष्ट है कि गढ़वाल में देवी-देवताओं की नृत्यमयी उपासना ही जागर कहलाती हैं। जागर आयोजित कराने का उद्देश्य देवता को प्रसन्न करना अथवा केई मनौती पूरी होने पर देवी-देवता का आभार व्यक्त करना है। आनुष्ठानिक और धर्म - भावना से संपृक्त होने के कारण इन गाथाओं के प्रति लोक का विशेष अनुराग होता है। प्रारंभ, मध्य और समापन तीन चरणों में आयोजित होने वाली जागर गाथाओं में देवता अवतरण की घटना महत्वपूर्ण होती है। देवता के साक्षात्कार और आशीर्वाद स्वरूप चावल (अक्षत - ज्यूंदाल) प्रदान करने से भक्तजन स्वयं को धन्य मानते हैं।

जागरों का प्रारंभ पवित्रीकरण, धूप-दीप के बाद 'जाग' और 'प्रकट' शब्दों के बार-बार संबोधन - उच्चारण से होता है। प्रारंभ में भंकोरा (तांबे के दो तुरहीनुमा यंत्र) घंटे, शंख आदि बजाकर मंत्रोच्चारण के साथ पुरोहित अथवा आवजी संबंधित देवता की विरुदावली कहता है। इसके पश्चात गाथा आरंभ होती है। जागर में वाद्य यंत्रों में या तो ढोल दमाऊं और या फिर कांस की थाली और डमरू ढोलक (घडियाला) प्रयोग में लाए जाते हैं। प्रारंभ में पवित्रीकरण के बाद प्रमुख तीर्थ स्थलों को जाग्रत करने के उद्देश्य से उनका नाम लिया जाता है-

हरि हरिद्वार जाग

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

धौली देवप्रयाग जाग / नौखंभा हिवाळा जाग

बदरी का बाड़ा जाग / केदार की कोंणी जाग

चौपड़ा चौथान जाग/ दैणी द्वारिका जाग

बायीं मथुरा जाग। (3)

इसके बाद गाथा आरंभ होकर लंबी चलती है। कभी-कभी तो अनवरत 2-3 घंटे तक । बीच में जब कभी किसी देवी-देवता की गाथा में संबंधित देवता का वर्णन पराक्रम, शौर्य, साहस और भक्त वत्सलता की प्रशंसा पराकाष्ठा पर पहुंच जाती है तो वह देवता अवतरित हो जाता है। वैसे जागर गाथा आयोजन में देवता अवतरण का एक निश्चित समय एवं प्रक्रिया निर्धारित होती है। प्रायः गाथा आयोजन के दौरान निश्चित समय के अंतराल पर होने वाले यज्ञ के दौरान देवता अवतरित होते हैं ।

यह प्रक्रिया प्रत्येक प्रहर पर सम्पन्न होती है। इसे 'पहर आना' कहा जाता है। जागर गाथा आयोजन के संपूर्ण अनुष्ठान अथवा काल को हवन, जात, जातरा कहा जाता है। प्रायः यह आयोजन एक ही देवता के नाम से या निमित्त होता है, किन्तु उसके साथ अन्य देवी-देवता भी अवतरित होते हैं। वे प्रायः मुख्य देवता के क्षेत्र या रक्त संबंधी होते हैं।

देवता अवतरण प्रायः हल्के कंपन से आरंभ होता है । पश्वा पर जब यह कंपन पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है तो वह हवाssss की ओजस्वी ध्वनि के साथ हाथ फैलाते हुए नृत्य करने लगता है । प्रतीत होता है कि उक्त पवा के शरीर में तीन-चार गुनी शक्ति समाहित हो गई है। उसके मुख पर अनोखा तेज - ओज प्रकट होने लगता है। अवतरित देवता पश्वा के माध्यम से अपनी विरुदावली कहते हुए और प्रशंसा में कुछ वाक्य गान करते हुए भक्तों पर चावल फेंकता है और भक्तों को अनिष्ट शक्तियों से मुक्ति दिलाता है। पश्वा पर यह देवता किस रूप में कैसा आता है और इसमें कितनी शक्ति एवं सचाई है, यह तो शोध का विषय है, किन्तु इस प्रक्रिया पर लोक की अगाध आस्था अडिग है ।

लोक में अनेक लोगों के मुख से अभी भी ऐसे देवताओं के किए चमत्कार सुनने को मिलते हैं। गढ़वाली समाज में वर्तमान में भी व्याप्त देव अवतरण की इस परंपरा पर कहा जा सकता है कि यहां के लोक का ब्रह्मांड

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अथवा स्वर्ग लोक में व्याप्त किसी शक्ति पर परम विश्वास है और उसने उसके साथ मानवीय संबंध स्थापित करने का प्रयास किया है ।

जागर की कथावस्तु संबंधित देवता के अवतरण, जीवन से जुड़ी घटनाएं और उसके परोपकारी कृतित्व होती है। पूरी गाथा एक ही देवता के यशगान पर केंद्रित रहती है। कभी-कभी एक जागर गाथा में अन्य देवी-देवताओं की सहगाथाएं भी चलती हैं, किंतु ये देवी-देवता उस मुख्य देवता से ही जुड़े होते हैं। जैसे नागराजा (श्रीकृष्ण) की गाथाओं में रमोला, ब्रह्मकौल की गाथाएं भी आती हैं। श्रीकृष्ण का संबंध रमोलीगढ़ से होना बताया जाता है और रमोला रमोलीगढ़ का स्वामी (शासक) था ।

इसी प्रकार घडियाल (घंटाकर्ण) की गाथा के साथ पांडवों की गाथा भी चलती है। घडियाल को अभिमन्यु का अवतार माना गया है। इसी प्रकार कृ ष्णावतारी नृसिंह की गाथा के साथ श्रीकृष्ण की भी गाथा जुड़ी है। जागर गाथाओं में आनुष्ठानिक प्रक्रिया महत्वपूर्ण होती है। यह सब वैदिक परंपरा और ज्योतिषीय आधार पर होता है। प्रत्येक प्रहर पर जौ तिल, घी आदि का हवन एवं अंत के दिन पूर्णाहुति होती है। जागरों की अंतिम पूजा दक्षिण और वाम मार्गी दोनों होती हैं। (4)

देवी के जागरों में बकरी - बकरे की बलि दी जाती है। कई वर्ष पहले टिहरी के लोस्तु स्थित घंडियालधार मंदिर में भी बकरियों की बलि दी जाती थी, किन्तु अब यह प्रथा बंद हो चुकी है। नंदा राजजात के समय भी पहले बलि दी जाती थी, लेकिन अब वहां भी यह परंपरा इतिहास बन चुकी है। इस संबंध में प्रो. डी. डी. शर्मा लिखते है कि पौराणिक देवताओं में दुर्गा एवं कालिंका को छोड़कर और कोई भी नहीं जो कि पूजा में बलि ग्रहण करता हो, जबकि लोक देवताओं में अधिकांश ऐसे हैं जो या तो स्वयं या अपने गणों के लिए अवश्य बलि चाहते हैं ।

जागरों अथवा जात की यह प्रक्रिया यह प्रक्रिया विषम संख्या के दिनों (1-3-5-7-9) की होती है। अंतिम दिन स्यूंरता होता है। अंतिम रात्रि महत्वपूर्ण होती है। इस पूरी रात्रि को जागर गाथाएं गायन की परंपरा है । इस रात्रि का भी चौथा प्रहर महत्वपूर्ण होता है। इस समय लोक के लगभग सभी देवी-देवता अवतरित होते हैं। इसका कारण ब्रह्म मुहूर्त होना माना जा सकता है। योग विशेषज्ञों के अनुसार ब्रह्मांड वातावरण में इस समय स्वस्थ शक्तिमान वायु होती है और दिव्य शक्तियां पृथ्वी लोक में ग्रहण की जा सकती हैं। (5)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

जागरों में इस चौथे प्रहर में पहाड़ी वाद्य यंत्रों के वादन के बीच देवताओं का अवतरण और उनके यशोगान की ध्वनियां एक अनोखे दिव्य वातावरण की अभिसृष्टि करती हैं। जागरों की प्रक्रिया के समय शाम 4 बजे के प्रहर में संबंधित देवता का पश्वा दूध और जल का स्नान करता है। यह प्रक्रिया देव अवतरण के समय की है। नागराजा, घंटाकर्ण और नगेलो की जातों में यह परंपरा निभाई जाती है ।

स्नान के पश्चात श्वा भक्तों के माथे पर गीली हल्दी एवं अक्षत लगाता है। इसमें पश्वा अनामिका, मध्यमा और तर्जनी अर्थात् दायें हाथ की मध्य की तीन उंगलियों का प्रयोग करता है। त्रिपुंड रूप में लगाए जाने वाला यह टीका गढ़वाल में शैव संप्रदाय की बद्ध भक्ति का द्योतक है। इन देवताओं के लिंग के रूप में पूजन भी यही पुष्ट करता है। मात्र पुरुष भक्तों के ही माथे पर टीका लगाए जाने से प्रतीत होते हैं कि प्राचीन गढ़वाली समाज में स्त्री को आज की तरह सामाजिक सहभागिता एवं स्वतंत्रता का अधिकार नहीं था ।

शारीरिक अपवित्रता की आशंका भी इस परंपरा के मूल में ही हो सकती है। इन अनुष्ठानों में देवताओं के प्रतीक के रूप में लिंग, निशा (लंबी छड़ी पर रंगीन वस्त्र और शिखर पर छत्र) की पूजा की जाती है। नैलचामी, लस्या, ग्यारह गांव, हिंदाव में नग्रेला, महेंद्र देवता, देवी, जगदी की डोलियां नचाने की भी परंपरा है। बताते हैं कि डोली वाहक भक्तों को चलने का दिशा-निर्देश संबंधित देवी-देवता ही करते हैं। जागर गाथा का अंतिम चरण देवताओं की विदाई वाला होता है। अर्थात् इस समय देवता मानव देह से उतरने लगते हैं।

संदर्भ सूची

1. वीरेन्द्र बर्त्वाल, पंचशील शोध समीक्षा, संस्करण 2010, पृ. 72.
2. वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल, गढ़वाली गाथाओं में लोक और देवता, विनसर पब्लिशिंग, उत्तराखण्ड, संस्करण 2014, पृ. 56.
3. वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल, गढ़वाली गाथाओं में लोक और देवता, विनसर पब्लिशिंग, उत्तराखण्ड, संस्करण 2014, पृ. 55.
4. वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल, गढ़वाली गाथाओं में लोक और देवता, विनसर पब्लिशिंग, उत्तराखण्ड, संस्करण 2014, पृ. 85.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

5. वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल, गढ़वाली गाथाओं में लोक और देवता, विनसर पब्लिशिंग, उत्तराखण्ड, संस्करण 2014, पृ. 59.